स्नातक कला उपाधि कार्यक्रम
(बी.ए.जी. संस्कृत) (बी.ए.जी.)
सत्रांत परीक्षा
दिसम्बर, 2022

बी.एस.के.ई.-141 : आयुर्वेद के मूल आधार

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *इस प्रश्न-पत्र में **दो** खण्ड हैं । दोनों खण्ड करना **अनिवार्य** है । खण्डों में दिए गए निर्देशानुसार ही प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।*

खण्ड 1

1. अधोलिखित प्रश्नों में से किन्हीं ***पाँच*** प्रश्नों के उत्तर लिखिए : *5×15=75*

(क) आयुर्वेद की धन्वन्तरि पद्धति की व्याख्या कीजिए ।

(ख) वर्षा ऋतु के अपथ्य पर लेख लिखिए ।

(ग) शिशिर ऋतु में लिए जाने वाले आहार-विहार पर निबन्ध लिखिए ।

(घ) चरक संहिता (सूत्र स्थानम्) का संक्षिप्त परिचय दीजिए ।

(ङ) उपनिषदों का अर्थ, परिभाषा बताते हुए प्रमुख उपनिषदों पर प्रकाश डालिए ।

(च) ग्रीष्म ऋतु में अपथ्य पर लेख लिखिए ।

खण्ड 2

2. (क) निम्नलिखित में से किन्हीं ***तीन*** विषयों पर टिप्पणियाँ लिखिए : *3×5=15*

(i) बृहदारण्यक उपनिषद्

(ii) आयुर्वेद की परिभाषा और लक्षण

(iii) द्रव्य अभिप्राय और वर्गीकरण

(iv) तैत्तिरीयोपनिषद्

(ख) निम्नलिखित में से किसी ***एक*** की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : *10*

प्राणा ब्रह्मेति व्यजानात् । प्राणाद्धयेव खल्विमानि
भूतानि जायन्ते । प्राणेन जातानि जीवन्ति ।
प्राणं प्रयन्तयभिसंविशन्तीति । तद्विज्ञाय पुनरेव
वरुणं पितरमुपससार । अधीहि भगवो ब्रह्मेति ।
तं होवाच । तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व । तपो ब्रह्मेति ।
स तपोऽतप्यत । स तपस्तप्त्वा ।।

अथवा

अन्नं न निन्द्यात् तद्व्रतम् । प्राणों वा अन्नम् । शरीरमन्नादम् । प्राणे शरीरं प्रतिष्ठितम् । शरीरे प्राणः प्रतिष्ठितः । तदेतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितम् । स य एतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितं वेद प्रतितिष्ठति । अन्नवानन्नादो भवति । महान् भवति प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन महान कीर्त्या ।